

... चतुर्भुज महाकाल (उन्नीसवाँ अध्याय) ...

इधर इस भीषण आग की गगनचुम्बी लपटों को देखकर सम्राट अकबर को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। लेकिन उसे जब अपने ही कुछ सैनिकों ने इस रजपुती जोहर की प्रथा एवं कथा से अवगत कराया तो मेवाड़ी माटी की इस अनुठी-अनोखी व अवर्णनीय बलिदानी भावना के प्रति अकबर का डरा-सहमा शीघ्र स्वतः नतमस्तक होता गया। अब धीरे-धीरे रात का अँधेरा छँटने लगा और भोर की प्रथम रश्मि द्वारा धरती माता के आँचल का स्पर्श करते ही युद्ध का बिगुल बज उठा। दोनों तरफ से सैन्य शक्तियाँ आक्रमण के लिए तैयार हो चुकी थी। इधर जयमलजी युद्धक्षेत्र में अपनी शून्यप्रायः उपस्थिति के कारण व्यथित हो रहे थे। शत्रुओं का शीघ्रकाटने के लिए उनकी चमचमाती तलवार लालायित हो रही थी।

ऐसी परिस्थिति में किसी भारी-भरकम हाथी के बराबर बलवाले अपने महाशक्तिशाली काकोसा के मन में युद्ध के प्रति जुनून को देखकर कल्लाजी ने उनको अपनी भूजाओं (कांधों) पर धारण कर लिया। चाचा-भतीजा अब इस रोद्र रूप में एकाकार होकर दुगुने जोश से लड़ने लगे। अपने सेनानायक को इस असहाय अवस्था में भी युद्ध के प्रति उद्यत देखकर चित्तोडी सेना अब पूरी ऊर्जा के साथ समरांगण में हावी होती गई।

ये राजपुत योद्धा संख्या बल की दृष्टि से मुगल फोज के आगे भले ही नगण्य थे, परंतु साहस एवं शूवीरता के मामले में मरने-मारने की भावना इन रणबाँकुरों के भीतर कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसी कारण से सेनापति पत्ताजी का कुशल नेतृत्व और जयमल कल्ला का चतुर्भुज रूप देखकर कई मुगल सैनिक तो डर-उत्तर कर ही मरने लगे थे तथा अनेकों सिपाही इधर-उधर भागने-छिपने की जगह ढूँढ़ रहे थे। कुछ ही समय में रणक्षेत्र में शत्रुसैनिकों की लाशों के ढेर लग गये।

... सेना प्रमुख शहीद (बीसवाँ अध्याय) ...

अब धर्मसंकट में फँसे अकबर के पास इस चतुर्भुज महाकाल को काबू में करने का कोई तरीका नहीं था। ऐसे में उसने अपने चतुर दरबारी बीरबल की राय जाननी चाही तो सम्राट के सम्मानित ज्ञानरत्न बीरबल ने हिन्दू धर्म की कमजोरी का अनुमान लगाकर अकबर को युद्ध क्षेत्र में गाय का रक्त प्रयोग में लेने की सलाह दी।

फलस्वरूप मुगल बादशाह ने छलकपट का सहारा लेकर इस विकराल चतुर्भुज रूप के आगे गाय का रक्त डाल दिया। ऐसी परिस्थिति में काका-भतीजा कुछ समझ पाते, उससे पहले ही पीछे से किसी ने जयमलजी की पीठ पर मजबूत वार कर दिया। जिससे मेवाड़ी सेना का यह बलवान सेनाधिपति वीरगति को प्राप्त हो गया। ऐसे में आक्रोशित कल्लाजीने बिजली की गति से पीछे मुड़कर अपने काकोसा के हत्यारे को तलवार के एक ही झटके से मौत के घाट उतार दिया।